भगत नामदेव - सबद २०

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥

रागु तिलंग, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ७२७

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥१॥ रहाउ ॥
करीमां रहीमां अलाह तू गनीं ॥
हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनीं ॥१॥
दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी ॥
देहि लेहि एकु तूं दिगर को नही ॥२॥
तूं दानां तूं बीनां मै बीचारु किआ करी ॥
नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी ॥३॥१॥२॥

सार: अहं में सत्य को देखने की दृष्टि का अभाव होता है। स्पष्टता तब उत्पन्न होती है, जब हम अपने भीतर स्थित जागरूकता का सहारा लेते हैं जो सदैव हमारे भीतर रहकर सहायता करती है। यह अंतर्दृष्टि साधक और सत्य के बीच की दूरी के भ्रम को मिटा देती है। जागरूकता कोई दूरस्थ वस्तु नहीं है जिसे प्राप्त किया जाए, बल्कि यह शांत उपस्थिति है जिसके भीतर समस्त अनुभव घटित होते हैं। जैसे आँखें, जो स्वयं को नहीं देख सकतीं, किंतु देखने की समस्त क्रिया को संभव बनाती हैं, साधक भी जागरूकता से कभी अलग नहीं होता। जब हम जागरूकता को किसी बाहरी वस्तु के रूप में खोजना बंद कर देते हैं तब वह स्वयं को हमारे अस्तित्व के मूल-तत्व के रूप में प्रकट करती है। इस प्रकार, अनुभूति का साक्षात्कार किसी नई खोज का नाम नहीं बल्कि यह उस सत्य की पहचान है जो सदैव हमारे भीतर ही विद्यमान रहा है।

मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥

मेरी दृष्टिहीन अवस्था में, मेरा सहारा सर्वव्यापी चेतना पर ध्यान लगाना है। यह प्रतीक है कि अहं में सत्य को देखने की दृष्टि का अभाव होता है, स्पष्टता तब आती है जब हम अपने भीतर स्थित चेतना का आश्रय लेते हैं।

मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥१॥ रहाउ ॥

मैं असहाय और कमज़ोर हूँ, सर्वव्यापी चेतना का स्मरण ही मेरा एकमात्र आधार है। यह उस अवस्था की ओर संकेत करता है जिसमें साधक यह पहचान लेता है कि उसका स्थिर आधार प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों के साथ सामंजस्य है। (१)(विराम)

करीमां रहीमां अलाह तू गनीं ॥

हे कृपालु, हे दयालु, पूर्णता के सर्वव्यापी स्रोत आप ही हैं। यह अंतरात्मा का वर्णन सीमित सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि अनंत समृद्धि के स्रोत के रूप में करता है।

हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनीं ॥१॥

सदैव उपस्थित हैं और अत्यंत निकट, हर दहलीज पर, मेरे भीतर और मेरे सामने। यह हमारी चेतना को किसी दूरस्थ सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि हमारी वास्तविकता के साक्षी के रूप में प्रस्तुत करता है। (१)

दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी ॥

विशालता का सार, उदारता के साक्षात रूप आप ही हैं, अनंतता का सिद्धांत और समृद्धि की आत्मा हैं। यह उस सर्व-समावेशी ऊर्जा को दर्शाता है जो एक ही समय में स्रोत भी है और उपभोक्ता भी, यही अस्तित्व का मूल सार है।

देहि लेहि एकु तूं दिगर को नही ॥२॥

देने और लेने वाले, आप ही हैं, आपके सिवा कोई और नहीं है। यह अद्वैत को दर्शाता है, ब्रह्मांड में ऊर्जा के प्रत्येक प्रवाह का आना-जाना, उसी अद्वितीय तत्त्व की ही गति है। (२)

तूं दानां तूं बीनां मै बीचारु किआ करी ॥
जानने वाले और देखने वाले आप ही हैं, मेरी सीमित बुद्धि भला क्या विचार कर सकती है। यह स्वीकारना इस बात का संकेत है कि अहं से बंधी बुद्धि जागरूकता के स्वरूप को नहीं समझ सकती।

नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी ॥३॥१॥२॥
नामदेव कहते हैं कि उनके स्वामी दाता हैं, जो सर्वव्यापी ज्ञान का साक्षात् स्वरूप हैं। यह कथन ज्ञान की प्राप्ति हेतु आत्म-कृपा का संकेत देता है, वह ज्ञान जो सर्वत्र विद्यमान ऊर्जा के साथ हमारे सामंजस्य को पुनः स्थापित करता है। (३)(१)(२)

तत्त्व: भक्त नामदेव, अत्यंत कोमल और हृदयस्पर्शी स्वर में हमारे मन की सीमाओं और उस आध्यात्मिक रिक्तता को पहचानते हैं, जिसे हममें से अनेक लोग अनुभव करते हैं। इन सत्यों को खुले तौर पर स्वीकार करते हुए, वह हमें आत्म-करुणा के ऐसे गहन रूप को खोजने के लिए प्रेरित करते हैं जो हमें अपने आस-पास व्याप्त सार्वभौमिक सत्ता से जोड़ता है। वह हमें अपनी अहं-प्रेरित बुद्धि का त्याग करने की चुनौती देते हैं, यह स्वीकार करते हुए कि हमारा विश्लेषणात्मक मन अस्तित्व के मूल सार को पूरी तरह से नहीं समझ सकता। पूर्ण समर्पण में हम पुनः सरलता की ओर लौटते हैं जहाँ समझ को बाध्य नहीं किया जाता बल्कि वह सहजता के साथ स्वयं प्रकट होती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com